



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE



न्यायदान लोगों की भाषा में हो : न्यायमूर्ति आर. सी. चव्हाण

हिंदी विवि में अभिविन्यास कार्यक्रम का हुआ समापन

वर्धा, 17 अक्टूबर 2024: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के विधि विभाग द्वारा नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम के समापन सत्र में संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बॉम्बे हाईकोर्ट, नागपुर खण्डपीठ के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री आर. सी. चव्हाण ने विधि के विद्यार्थियों से अपेक्षा की कि जब भी आप न्यायिक प्रक्रिया में सम्मिलित हों तो लोगों की भाषा में निर्णय लिखें न कि प्रमाण भाषा में ताकि आमजन भी न्यायदान को जान सके। आप सभी ने हिंदी में विधि अध्ययन करने का चुनाव किया है यह बहुत ही गर्व की बात है। क्योंकि अपने देश में ज्यादातर हिंदी बोली जाती है। आम आदमी को न्यायिक प्रक्रिया का आकलन होना सबसे महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी में न्याय निर्णय होने से लोगों को भ्रम रहता है कि न्याय हुआ है कि नहीं। हिंदी में भी अब निर्णय आयेंगे तो लोगों को भी कानून की समझ होगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में विधि अध्यापन का दायित्व इस विश्वविद्यालय के साथ-साथ विधि विद्यापीठ ने उठाया जो अत्यंत सराहनीय है।



समापन सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि न्यायालय की भाषा जनता की भाषा से अलग नहीं होनी चाहिए। न्याय से जुड़े लोगों को भाषा का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि न्यायिक निर्णय का एक एक शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। हम जब शब्द बोलते हैं तो उसके साथ पूरा प्रसंग जुड़ा रहता है।

अभिविन्यास कार्यक्रम के अन्य सत्र में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के प्रो. मोना पुरोहित ने अभिविन्यास क्या है, विधि की शिक्षा क्यों आवश्यक है। इस पर चर्चा की। सत्र में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के प्रो. सुधांशु महापात्रा ने भी संबोधित किया। डॉ. युवराज खरे ने विधि क्षेत्र में करियर के अवसर विषय पर जानकारी दी। श्री आनंद भारती और डॉ. मनोज कुमार तिवारी ने भी अपने प्रेरक अनुभव छात्रों के साथ साझा किए। प्रतिवेदन प्रस्तुति एवं स्वागत वक्तव्य विधि विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी ने की।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिव्या शुक्ला ने किया तथा डॉ. विजय कुमार सिंह ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विधि विद्यार्थियों के साथ प्रो. बंशीधर पाण्डेय, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, डॉ. परमानन्द राठौर, सुश्री ऋचा कुशवाहा, डॉ. वागीश राज शुक्ल, ज्योति सावले, स्मृति त्रिपाठी, अमोल आड़े, विक्की लांडे, सौरभ पाण्डेय आदि उपस्थित थे।

मराठी :

न्याय हा जनतेच्या भाषेत असावा : न्यायमूर्ती आर. सी. चव्हाण

हिंदी विश्वविद्यालयात अभिविन्यास कार्यक्रमाचा समारोप

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: buddhadassmirge@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE



वर्धा, 17 ऑक्टोबर 2024: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाच्या विधी विभागातर्फे नव्याने प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांसाठी आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रमात प्रमुख पाहुणे म्हणून मुंबई उच्च न्यायालयाच्या नागपूर खंडपीठाचे सेवानिवृत्त न्यायमूर्ती श्री आर. सी. चव्हाण यांनी विधीच्या विद्यार्थ्यांकडून अपेक्षा केली की, जेव्हा तुम्ही न्यायालयीन प्रक्रियेत सहभागी असाल तेव्हा पुराव्याच्या भाषेत नव्हे तर जनतेच्या भाषेत निकाल लिहा जेणेकरून सर्वसामान्यांनाही दिलेला न्याय कळेल. तुम्हा सर्वांनी हिंदीतून कायद्याचा अभ्यास करण्याची निवड केली आहे ही अभिमानाची बाब आहे. कारण आपल्या देशात बहुतांशी हिंदी भाषा बोलली जाते. सामान्य माणसाला न्यायालयीन प्रक्रियेचे आकलन होणे सर्वात महत्त्वाचे आहे. न्यायालयीन निर्णय इंग्रजीत दिल्याने न्याय मिळाला की नाही, याबाबत लोकांमध्ये संभ्रम आहे. आता हिंदीतून निर्णय निघणार असतील तर लोकांना कायदाही समजेल. ते पुढे म्हणाले की राष्ट्रीय स्तरावर हिंदीमध्ये कायदा शिकवण्याची जबाबदारी या विश्वविद्यालया सोबत विधी विभागाने घेतली ही अत्यंत प्रशंसनीय आहे.

अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह म्हणाले की न्यायालयाची भाषा जनतेच्या भाषेपेक्षा वेगळी असू नये. न्यायाशी संबंधित लोकांना भाषेचे ज्ञान असले पाहिजे कारण न्यायालयीन निर्णयाचा प्रत्येक शब्द खूप महत्त्वाचा असतो, जेव्हा आपण एक शब्द बोलतो तेव्हा त्याच्याशी संपूर्ण संदर्भ जोडलेला असतो.

विविध सत्रात भोपाळ येथील बरकतुल्ला विश्वविद्यालयाच्या प्रो. मोना पुरोहित यांनी अभिमुखता म्हणजे काय आणि कायदेविषयक शिक्षण का आवश्यक आहे. कायद्याच्या विद्यार्थ्यांचे समाजात काय योगदान आहे यावर चर्चा केली. बिलासपूर येथील गुरु घासीदास विश्वविद्यालयाचे प्रो. सुधांशु महापात्रा व डॉ. युवराज खरे यांनी विधी क्षेत्रातील करिअरच्या संधीची माहिती दिली. श्री आनंद भारती आणि डॉ. मनोज कुमार तिवारी यांनीही त्यांचे प्रेरणादायी अनुभव मांडले. अहवाल सादरीकरण व स्वागत निवेदन विधी विद्यापीठचे अधिष्ठाता प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी यांनी केले.

कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. दिव्या शुक्ला यांनी केले तर डॉ. विजय कुमार सिंह यांनी आभार मानले. कार्यक्रमात विधी विद्यार्थ्यांसोबत प्रो. बंशीधर पांडे, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, डॉ. परमानन्द राठोर, सुश्री ऋचा कुशवाहा, डॉ. वागीश राज शुक्ल, ज्योति सावले, स्मृति त्रिपाठी, अमोल आडे, विकी लांडे, सौरभ पांडे उपस्थित होते.

नमस्कार !

मा. संपादक/संवाददाता महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करने का कष्ट करें।
सादर धन्यवाद ।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: buddhadassmirge@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305